Q. बक्सर का युद्ध का कारण / परिणाम

बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि मीर कासिम के नवाब बनने के बाद उसके कार्य एवं कम्पनी के स्वतंत्र और शासक की तरह व्यवहार करने के कारण पहले ही तैयार हो चुकी थी. अतः दोनों पक्ष युद्ध की तैयारी करने लगे. कलकत्ता कौंसिल ने पटना में हथियार भेजना प्रारम्भ कर दिया जिसे नवाब ने मुंगेर में रोक लिया. आत्म रक्षा का कोई उपाय न देखकर मीर कासिम ने पटना से भागकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहां शरण ली। उस समय मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय भी वहां थे।

अतः अंग्रेजों के विरुद्ध मुगल सम्राट शाह आलम अवध का नवाब वजीर शुजाउद्दौला तथा मीर कासिम ने संयुक्त मोर्चा कायम किया। तीनों की संयुक्तवाहिनी के साथ अंग्रेजों की सेना का युद्ध 22 अक्टूबर 1764 को बक्सर में प्रारंभ हुआ। मीर कासिम और उसके मित्रों की भयंकर पराजय हुई। शुजाउद्दौला रोहिलखंड भाग गया। मीर कासिम भी रणक्षेत्र से भाग खड़ा हुआ और चौदह वर्षों तक इधर-उधर भटकता रहा। अंत में 1777 ई० में दिल्ली के निकट

को भी स्वीकार कर लिया. इसरी ओर क्लाइव ने नवाब के विरुद्ध षड्यन्त्रकारियों का गुप्त तैयार कर यह कहा कि उसने अलीनगर की सन्धि की शर्तों को ईमानदारी से पालन नहीं किया, अतः अब उन्हें नवाब के पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। इसी बीच सिराजुद्दौला के दरबार का अंग्रेज रेजिडेंट भी चुपचाप कलकत्ता भाग गया.

युद्ध → क्लाइव के प्लासी की ओर प्रस्थान करने के बाद नवाब अपनी शक्ति को एकत्र कर आगे बढ़ा और 23 जून 1757 ई० को क्लाइव और नवाब सिराजुद्दौला के मध्य युद्ध हुआ. इस युद्ध में नवाब के सेनापति (1) मीर जाफर (2) यार लुत्फ और राय दुर्लभ (3) जो कि प्रमुख षड्यन्त्रकारी थे, की विशाल सेनाएँ चुपचाप खड़ी रही. नवाब के साथ मोहनलाल और मीर मदन की छोटी सेनाएँ ही अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी फिर भी नवाब की विजय लगभग निश्चित थी, परन्तु मीर जाफर, यार लुत्फ और राय दुर्लभ अपनी सेना सहित अंग्रेजों से मिल गये. परिणामस्वरूप नवाब हार गया और किसी प्रकार बच कर युद्ध क्षेत्र से भाग निकला और मुर्शिदाबाद पहुँचा. उसके साथ

मुर्शिदाबाद

उसकी बेगम भी थी परन्तु वह पकड़ा
गया और मीर जाफर के पुत्र मीरन
के इशारे पर मुहम्मद बेग द्वारा उसकी
हत्या कर दी गई. इसके साथ ही अंग्रेजी
साम्राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त
हो गया.

अत्यंत दयनीय दशा में उसकी मृत्यु हो गई। शाह आलम तुरंत अंग्रेजी दल से जा मिला और अंग्रेजों से संधि कर ली।

निष्कर्ष

ऐसा माना जाता है कि बक्सर के युद्ध का ऐतिहासिक एवं राजनैतिक महत्व प्लासी के युद्ध से अधिक था। मुगल सम्राट बंगाल का नवाब एवं अवध का नवाब तीनों अब पूर्ण रूप से कठपुतली शासक हो गये।

एक इतिहासकार के शब्दों में "इस प्रकार भारत के भाग्य निर्धारक प्रतिद्वंद्वी बक्सर युद्ध का अंत हुआ। यह युद्ध पिछ वीरता से लड़ा गया था उसका परिणाम भी उतना ही महत्वपूर्ण हुआ।"

मीर कासिम

⇒ बक्सर के युद्ध के परिणाम एवं महत्व :→ बक्सर के युद्ध के अनेक महत्वपूर्ण व स्थायी परिणाम निकले. इस युद्ध ने अंग्रेजों के प्लासी के युद्ध के अधूरे कार्यों को पूरा कर दिया. बंगाल की गद्दी पर अंग्रेजों के कठपुतली नवाब का शासन स्थापित हो

(1) इस युद्ध ने अंग्रेजों को उत्तरी भारत की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बना दिया तथा भारतीय सेना की कमजोरी उनके सम्मुख प्रकट हो गई. अतः भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की दृष्टि से बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की विजय का महत्व विशिष्ट है.

(2) इस विजय के फलस्वरूप मीर कासिम ही पराजित नहीं हुआ अपितु अवध का नवाब वजीर शुजाउद्दौला तथा भारत का मुगल सम्राट शाह आलम भी पराजित हुए। इस प्रकार, उत्तर के तीन विशिष्ट एवं शक्तिशाली शक्ति पराजित हुए।

(3) शुजाउद्दौला ने अपनी रक्षा के लिए अपने राज्य में अपने खर्च पर अंग्रेजी फौज रखना स्वीकार किया। इस प्रकार अब अवध अंग्रेजों और मराठों के बीच मध्यवर्ती राज्य बन गया। व्यवहारिक रूप में वह अंग्रेजों के अधीन हो गया और अंग्रेजी राज्य का प्रभुत्व अवध की उत्तरी-पश्चिमी सीमा तक पहुँच गया। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण आधार बन गया। बक्सर की विजय ने अंग्रेजी प्रभुत्व की सीमा को